बीमारी	प्रारम्भिक टीकाकरण		पुनः टीकाकरण
	प्रथम टीका	बूस्टर टीका	
खुरपका व मुंहपका रोग	3-4 महीने की उम्र	प्रथम टीकाकरण के 3-4 सप्ताह के पश्चात्	6 माह
बकरी चेचक	3-5 महीने की उम्र	प्रथम टीकाकरण के 1 माह पश्चात्	प्रतिवर्ष
गलघोंटू/ हिमोरेजिक सेप्टीसीमीया (एच. एस.)	3 महीने की उम्र	प्रथम टीकाकरण के 3-4 सप्ताह के पश्चात्	6 माह/ प्रतिवर्ष

कृमि नाशक कार्यक्रम

कृमि रोग	उम्र	सेवन कराने की अवधि	ध्यान देने योग्य विशेष बातें
कॉक्सीडियोसिस (कुकडिया रोग)	2-3 माह पर	3-5 दिन तक	6 माह की उम्र तक काक्सीमारक दवा निर्धारित मात्रा में देनी चाहिये
अन्तः परजीवी (डिवार्मिंग)	3 माह की उम्र	बरसात के प्रारम्भ में तथा अन्त में	सभी पशुओं को एक साथ दवा देनी चाहिये
बाह्य परजीवी (डिपिंग)	सभी उम्र में	सर्दियों के प्रारम्भ में तथा अन्त में	सभी पशुओं को एक साथ से नहलाना चाहिये

नियमित जाँचें

बीमारी	अवधि/अन्तराल	विशेष विवरण
ब्रुसेल्लोसिस	6 माह/प्रतिवर्ष	संक्रमित पशुओं को तुरन्त वध कर गहरे गड्डे में दफन करें।
जोहनीज बीमारी (जे.डी.)	6 माह/प्रतिवर्ष	संक्रमित पशुओं को झुण्ड से तुरन्त निकाल देना चाहिये।

बकरी प्रबन्धन हेत कुछ बातें :-

1. नियमित रूप से आवास की सफाई करनी चाहिये तथा गन्दगी को बाड़ों से काफी दूर बने गड्डों में दबा देनी चाहिये।
2. बाड़ों के अन्दर व बाहर नियमित रूप से हफ्ते में एक या दो बार बिना बुझे चूने का छिड़काव करें ।
3. प्रतिमाह बाड़ों के अन्दर फर्श पर सूखा घासफूस डालकर जला देना चाहिये। जिससे बाड़ों के भीतर तथा बाहर पूर्ण विसंक्रमण हो जाता है तथा परजीवियों की सभी अवस्थायें नष्ट हो जाती हैं।
4. प्रति चार माह के अन्तराल पर बाड़ों की जमीन की मिट्टी कम से कम 6 इंच तक खोद कर निकाल दें व नई साफ मिट्टी भर देने से संक्रमण की सम्भावना कम हो जाती है।
5. बीमार जानवरों को अलग रखकर उनका उचित उपचार एवं देखभाल करनी चाहिये।
6. खरीदे गये जानवरों को पहले से पल रहे झुण्ड में नहीं मिलाना चाहिये तथा उन्हें 21 दिनों तक अलग रखना चाहिये ।

बकरियों को कब और कैसे बेचें :-

1. बकरियों का मूल्य निर्धारण वजन के हिसाब से करें।
2. छोटे एवं मध्यम नस्ल की बकरी बेचने का उत्तम समय 6-9 महीना एवं बड़े नस्ल का 7-12 महीना।

बकरी पालक उपर्युक्त वैज्ञानिक विधियों को अपनाकर अधिक से अधिक लाभ ले सकते हैं ।

लेखक :
विजय कुमार, आर. पुरूषोत्तमन, एन. रामाचन्द्रन,
अशोक कुमार एवं बृज मोहन

प्रकाशक :
एम. एस. चौहान, निदेशक, भा.कृ.अ.प.-के.ब.अ.सं., मखदूम
अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क करें-
हैल्पलाइन नं. : +91 - 565-2763320
ई-मेल : director.cirg@icar.gov.in,
वैबसाइट : http//www.cirg.res.in
भा.कृ.अ.प.-केन्द्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान, मखदूम,
फरह-281122, मथुरा (उ.प्र.)

ys9456684421@gmail.com

मथुरा जनपद में वैज्ञानिक बकरी पालन : एक कार्यप्रणाली का पैकेज

CIRG 1979 MATHURA

भा.कृ.अ.प.-केन्द्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान
मखदूम, फरह-281122, मथुरा (उ.प्र.)

भाकृअनुप ICAR

मथुरा जनपद भौगोलिक दृष्टिकोण से बकरी पालन हेतु बहुत ही अनुकूल क्षेत्र है। जनपद में लगभग 1 लाख 30 हजार बकरियाँ हैं जो बरबरी, जमुनापारी, सिरोही एवं गैरवर्गीकृत नस्ल की है। आज भी अधिकांश कृषक बकरी पालन परंपरागत तरीकों से ही कर रहे हैं। जिससे बकरियाँ अपनी पूर्ण उत्पादन क्षमता में नहीं आ पाती । प्रस्तुत लेख में वैज्ञानिक बकरी पालन का सम्पूर्ण कार्यप्रणाली पैकेज दिया जा रहा है जिन्हें अपनाकर आप अपने लागत मूल्य का 3 से 4 गुणा आमदनी ले सकते हैं।

किस नस्ल का बकरी रखें :-

जनपद में बरबरी, जमुनापारी, सिरोही एवं जखराना नस्ल की बकरी अच्छी तरह पाली जाती है। अच्छी कीमत हेतु हमेशा शुद्ध नस्ल की बकरियाँ ही पालें ।

मादा का चयन कैसे करें :

1. बकरी का पिछला हिस्सा तिकोना एवं पैर मुड़ा हुआ हो।
2. बकरी स्वस्थ एवं नस्ल के अनुसार रूप, रंग एवं भार के हो।
3. उम्र के हिसाब से थन का विकास हुआ हो।
4. दो ब्यातों की बीच कम अन्तराल एवं जुड़वा बच्चे देती हो।

बीजू बकरे का चयन कैसे करें :-

1. नस्ल के अनुसार रूप, रंग एवं कद-काठी अच्छी हो।
2. शारीरिक रूप से पूर्ण स्वस्थ एवं चुस्त हो।
3. दोनों अण्डकोष पूर्ण रूप से विकसित हो।
4. अच्छी माँ की संतान हो ।

प्रजनन प्रबन्धन कैसे करें :-

1. समान नस्ल के नर एवं मादा को प्रजनन करायें।
2. पूर्ण परिपक्व होने के बाद (डेढ़ से दो वर्ष) बकरे का प्रजनन में उपयोग करें।
3. एक बकरा 20-30 बकरियों को ग्याभिन कराने के लिए पर्याप्त है (सघन पद्धति में)।
4. ध्यान रहे कि एक बकरा से उत्पन्न बकरी पुनः उसी बकरा (पिता से) ग्याभिन न हो अर्थात अन्तः प्रजनन रोकें।
5. मादाओं को गर्मी में आने के 12 घंटे बाद ग्याभिन करायें।
6. बकरियों को ग्याभिन कराने का उत्तम समय अक्टूबर-नवम्बर एवं मई-जून माह है।
7. प्रसवपूर्व बकरियों को दाने की मात्रा बढ़ा दें एवं अलग आवास व्यवस्था रखें ।

मेमना प्रबन्धन कैसे करें :-

1. बच्चे के जन्मोपरान्त तुरन्त साफ कपड़े से उसकी सफाई करें।
2. नाभी को नई ब्लेड से काट कर टिन्चर आयोडीन डालें।
3. माँ का प्रथम दूध या खीज (कोलेस्ट्रम) बच्चे को तुरन्त पिलायें इसके लिए जड़ गिरने का इंतजार ना करें। इससे बच्चों में रोग प्रतिरोधक क्षमता का विकास होता है।
4. बच्चों को 15 दिन का होने पर हरा चारा देना आरम्भ करें एवं धीरे-धीरे दूध का मात्रा कम करें।

पोषण प्रबन्धन

अर्ध सघन एवं सघन में पद्धति में रखे जाने वाले बकरे एवं बकरियों में प्रतिदिन दाने/चारे की मात्रा

दाना-चारा	मैमने (3-12 माह)	व्यस्क बकरा/ बकरी	ग्याभिन बकरी	प्रजनन व से (प्रजनन के समय)
दाना मिश्रण	100-300 ग्राम	200-250 ग्राम	400-500 ग्राम	400 ग्राम
सूखा चारा	100-400 ग्राम	300-600 ग्राम	300-600 ग्राम	300-600 ग्राम
हरा चारा	500 ग्रा. व 1 किलो	1-2.5 किलो	1-3 किलो	1-3 किलो

1. अर्थ सघन पद्धति में बकरियों को 5-6 घंटे चराई करायें।
2. दाना-मिश्रण बनाने के लिए खली 20 प्रतिशत, ज्वार/बाजरा/ मक्का/गेहूँ 60 प्रतिशत, भूसी-17 प्रतिशत, खनिज मिश्रण 1. 5 एवं नमक 1.5 प्रतिशत मिलाना चाहिये।
3. बकरी के आहार में अचानक कोई परिवर्तन न करें ।
4. बकरियों को बाड़े में हरा चारा, भूसा व दाना उपयुक्त उपकरण में देना चाहिए इससे आहार का नुकसान नहीं होता एवं चारा संक्रमित भी नहीं होता।

आवास-प्रबन्धन :

अधिकांशः बकरी आवासों की लम्बाई 20 मीटर, चौड़ाई 6 मीटर तथा किनारे पर ऊँचाई 2.7 मीटर रखी जाती है। बकरियों को निम्नलिखित जगह की जरूरत पड़ती है-

उम्र	ढकी जगह की आवश्यकता (वर्ग मीटर में)	बाड़े की आवश्यकता (वर्ग मीटर में)
3 महीने तक के बच्चे	0.2-0.3	0.4-0.6
3 से 9 महीने तक के बच्चे	0.6-0.75	1.2-1.5
9 से 12 महीने तक के बच्चे	0.75-1.0	1.5-2.0
1-2 वर्ष तक के युवा बच्चे	1.0	2.0
वयस्क बकरे	1.5-2.0	3.0-4.0
गाभिन एवं दूध देने वाली बकरियाँ	1.5-2.0	3.0

स्वास्थ्य प्रबन्धन :

स्वास्थ्य प्रबन्धन में थोड़ी सी लापरवाही बच्चों की बढ़त्तरी दर एवं बकरियें के उत्पादन को प्रभावित कर सकती है। संस्थान द्वारा बकरियों को संक्रामक एवं अन्य रोगों से बचाव के लिए कई तकनीकियाँ विकसित की हैं। इसके लिए संस्थान में स्वास्थ्य कलैण्डर विकसित किया है। जिसके उपयोग से मृत्युदर को निम्नम रखा जा सकता है :-

टीकाकरण कार्यक्रम

बीमारी	प्रारम्भिक टीकाकरण		पुनः टीकाकरण
	प्रथम टीका	बूस्टर टीका	
बकरी प्लेग (पी.पी.आर)	3 महीने की उम्र	आवश्यक नहीं	3 वर्ष पश्चात्
आंत्र विषाक्तता (इन्टेरोटोक्समिया)	3-4 महीने की उम्र	प्रथम टीकाकरण के 3-4 सप्ताह के पश्चात दूसरा टीका	वार्षिक (एक माह के अन्तराल पर दो बार)